42

जब लोगों को सचमुच सहायता की आवश्यकता होती है

मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:33-44; लूका 9:11-17; यूहन्ना 6:2-14, एक निकट दृष्टि

मसीह के सबसे महत्वपूर्ण आश्चर्यकर्मों में से एक आम तौर पर ''पांच हज़ार को खिलाना'' के रूप में प्रसिद्ध है। पुनरुत्थान के बाद, सुसमाचार के चारों वृज़ांतों में केवल इसी आश्चर्यकर्म को दर्ज किया गया है।[1] आश्चर्यकर्म की इस घटना को इतना महत्व ज़्यों दिया गया? शायद इसका कारण यह है कि यह प्रभु के कुछ ''सृजनात्मक'' आश्चर्यकर्मों में से एक था।[2] हो सकता है कि किसी और आश्चर्यकर्म को इतने ज्यादा लोगों ने न देखा हो, जिससे उनके बारे में भ्रम हो। इसका जो भी कारण हो, भीड़ को यीशु द्वारा खिलाने की कहानी आरज़िभक मसीहियों के लिए महत्वपूर्ण थी। रोटियों और मछलियों का अभिप्राय आरज़िभक मसीही कला में आम मिलता है। इस घटना का आज के मसीहियों के लिए भी विशेष अर्थ है। बाइबल की पसन्दीदा कहानियों के बारे में अधिकतर लोगों का मत स्पष्टतया इसी कहानी के पक्ष में होता है।

पांच हज़ार को खिलाने की बात अलग-अलग दृष्टिकोण से देखी जा सकती है,[3] परन्तु मैं इसे एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करना चाहता हूं कि यीशु ने लोगों की सहायता कैसे की व आप और मैं भी वैसे ही कैसे कर सकते हैं। यदि नया नियम कोई बात सिखाता है, तो वह यह है कि मसीह के अनुयायी होने के कारण, हमें दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है और उनकी सहायता करने की कोशिश करना आवश्यक है।

> इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ (गलातियों 6:10)।

> हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें (याकूब 1:27)।
>
> पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है? (1 यूहन्ना 3:17)।

पांच हज़ार को खिलाने की कहानी में उनकी जिन्हें सचमुच में आवश्यकता है, सहायता *करने* और *न करने* सहित इन आज्ञाओं को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण सिद्धांत मिलते हैं।

लोगों की आवश्यकताएं होती हैं

कहानी का पहला भाग इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि ऐसे लोग हैं, जिन्हें सममुच में सहायता की आवश्यकता होती है।[4] आइए कुछ पृष्ठभूमि लेकर विचार आरम्भ करते हैं।

यीशु और उसके प्रेरित गलील के आस-पास घूम रहे थे। दौरे के अन्त में, उन्हें पता चला कि राजा हेरोदेस ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवा दिया है और अब वह बड़े खतरनाक इरादे से उनके काम में रुचि ले रहा है।[5] मसीह ने बारहों को सुझाव दिया कि वे गलील की झील के पूर्व में चले जाएं। उनका गन्तव्य बैतसैदा-जुलियास के निकट का जंगली इलाका था, जो गलील की झील के उज़री सिरे के पार सात-आठ मील दूर था।[6] झील के पार उनका किश्ती में जाना सम्भवतया आनन्ददायक बात थी। मैं मसीह और शायद कुछ चेलों द्वारा सफ़र के दौरान झपकी लेने की कल्पना कर सकता हूं (देखें मज़ी 8:24)।

उस समय के ज़रूरतमन्द लोग

इसी बीच, कफ़रनहूम वाली भीड़ को किसी तरह यीशु की योजनाओं का पता चल गया और वे "नगर-नगर से पैदल उसके पीछे हो लिए" (मज़ी 14:13)। मरकुस ने लिखा है कि वे "इकट्ठे होकर वहां पैदल दौड़े और उनसे पहिले जा पहुंचे" (मरकुस 6:33)।[7] इस दृश्य को अपने मन में उतारें: जवान और स्वस्थ लोग किनारे-किनारे भाग रहे हैं, जबकि बूढ़े और अस्वस्थ धीरे-धीरे चले आ रहे हैं। वे आगे निकल आए लोग यीशु के पास अपने बीमारों को चंगा करने के लिए ला रहे थे (मज़ी 14:13, 14)। हर किसी ने एक साथ निकलना शुरू किया होगा, जिस कारण जल्द ही इस भीड़ ने झील के उज़री भाग में एक बहुत बड़े जुलूस का रूप ले लिया।

यीशु की किश्ती किनारे तक पहुंचने पर, एक बहुत बड़ी भीड़ उत्सुकता से उसकी राह देख रही थी (मरकुस 6:33; मज़ी 14:14)। ज़्या भीड़ को देखकर चेले बुड़बुड़ाए थे?[8] वे थके हुए थे और उन्हें भूख लगी थी (मरकुस 6:31); परन्तु यहां लोगों की एक

ऐसी भीड़ थी, जो हर समय कुछ न कुछ मांगती रहती है! मैं जानता हूं कि उन्हें कैसा लगा होगा। कई बार देह, प्राण और आत्मा में थका होने के बावजूद लोग मुझसे सहायता मांगने के लिए आते हैं। मैं कुछ हद तक करुणापूर्वक उनकी सहायता करने की कोशिश करता हूं और कभी-कभी मुझे अपनी नाराजगी को दबाना भी पड़ता है।[9]

यीशु की प्रतिक्रिया कभी-कभी मिलने वाली मेरी प्रतिक्रिया से अलग थी। उसने ''उन पर तरस खाया, ज़्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे, जिन का कोई रखवाला न हो''[10] (मरकुस 6:34क; देखें मत्ती 14:14)। लूका ने लिखा है कि वह आनन्द से उनसे मिला (लूका 9:11क)।[11] उसने उन्हें झेला नहीं अर्थात उन्हें बर्दाश्त ही नहीं किया, बल्कि उसने उनका *स्वागत किया।* यीशु की यह बात हमें चकित करती है।

यूहन्ना ने कहा है कि ''बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, ज़्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाता था, वे उनको देखते थे'' (यूहन्ना 6:2)। मसीह ने तुरन्त ''जो चंगे होना चाहते थे, उन्हें चंगा किया'' (लूका 9:11ग)। वह वचन सुनाने का कोई अवसर गंवाता नहीं था, इसलिए ''उन से परमेश्वर के राज्य की बातें'' (लूका 9:11ख) करते हुए ''वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा'' (मरकुस 6:34ख)।

यह यीशु के जीवन का एक और लज़्बा दिन था। वह कई बार वहां पहाड़ के एक तरफ़ आराम किया करता था (देखें यूहन्ना 6:4, 15)। परन्तु ज़्यादातर समय वह सिखाने और चंगा करने में ही व्यस्त रहता था। इसी दौरान लोगों की भीड़ बढ़ती रही (यूहन्ना 6:5)।[12] बाद में भीड़ की संज़्या ''स्त्रियों और बालकों को छोड़कर, पांच हज़ार पुरुषों के अटकल'' थी (मत्ती 14:21)। स्त्रियों और बच्चों के अनुमान अलग-अलग लगाए जाते हैं,[13] परन्तु वहां उपस्थित लोगों की संज़्या दस से पन्द्रह हज़ार के बीच रही होगी।

पूरा दिन, यीशु ने लोगों को आत्मिक भोजन खिलाया था; पर दिन ढलने पर, शारीरिक भोजन की आवश्यकता बढ़ गई थी। मसीह और उसके चेलों सहित हज़ारों लोगों की भीड़ भूखे पेट थी। (ज़्या आप एक ही समय में दस हज़ार लोगों के भूखे पेट गड़गड़ाने की कल्पना कर सकते हैं?) कफ़रनहूम से प्रभु के अचानक चले जाने और लोगों के आवेगशील ढंग से ग्रहण करने के कारण रास्ते के लिए तैयारी करने का समय ही नहीं मिला होगा।

रोमांचपूर्ण आश्चर्यकर्मों तथा जीवन बदलने वाली शिक्षा से भरे दिन में शारीरिक भोजन की आवश्यकता तुच्छ बात लग सकती है, परन्तु परमेश्वर ने हमारे शरीर को इस प्रकार से बनाया है कि इसे समय-समय पर फिर से भरना आवश्यक होता है। हम ''केवल रोटी ही से'' (मत्ती 4:4) जीवित नहीं रहते, परन्तु जीवित रहने के लिए कभी-कभी बिस्कुट या रोटी का टुकड़ा आवश्यक होता है।

यीशु अपने चेलों का ध्यान उस आवश्यकता की ओर दिलाने से नहीं हिचकिचाया। उसने भीड़ की ओर देखते हुए फिलिप्पुस से पूछा, ''हम इन के भोजन के लिए कहां से रोटी मोल लाएं?'' (यूहन्ना 6:5)। बाद में उसने प्रेरितों से कहा ''तुम ही इन्हें खाने को दो'' (मत्ती 14:16)। भीड़ की भी, शारीरिक और आत्मिक आवश्यकताएं थीं।

आज के ज़रूरतमंद लोग

आज भी लोगों की आवश्यकताएं हैं, जो सचमुच में वास्तविक हैं। उनकी सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताएं आत्मिक हैं। यीशु ने इसी बात पर ज़ोर दिया जब उसने कहा, ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे ज़्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में ज़्या देगा?'' (मज़ी 16:26)। लोगों की और भी आवश्यकताएं हैं, जिन्हें नज़रअन्दाज नहीं किया जाना चाहिए। एक आदमी किसी दूसरे को किसी ऐसे क्षेत्र में जाने की बात बता रहा था, जहां लोग भूख से मर रहे थे। दूसरे ने पूछा, ''आपने ज़्या किया?'' पहले ने उज़र दिया, ''मैंने उन्हें ट्रैज़्ट दिए।'' ''इससे ज़्या हुआ?'' दूसरे ने चकित होकर पूछा। वह आदमी दुखी होकर यह कहानी बता रहा था, ''वे उन्हें खा गए।''

कुछ आवश्यकताएं हैं, जिन्हें हम वर्षों से जानते हैं। जैसे कि भोजन और कपड़े की आवश्यकता। याकूब 2:15 उनकी बात करता है, जो ''नंगे उघाड़े ... और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी'' होती है। मैंने हाल ही में एक स्लाइड में चौथी और पांचवीं शताज़्दियों की आरज़्भिक चर्च बिल्डिंगें देखी हैं। इनमें से अधिकतर में ज़रूरतमंदों के लिए भोजन और वस्त्रों के लिए अलग से एक या अधिक कमरे बनाए गए थे। आज भी कई कलीसियाओं में परोपकार के काम के लिए अलग से ऐसे ही कमरे बनाए जाते हैं।

एक और आवश्यकता जिसे व्यापक तौर पर आवश्यकता माना जाता है, वह है विधवाओं और अनाथों की देखभाल करना। याकूब ने लिखा है, ''हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भज़्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के ज़्लेश में उनकी सुधि लें, ...'' (याकूब 1:27)। कई मण्डलियों में यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी विधवाओं की अनदेखी न हो, कार्यक्रम बनाए गए हैं (देखें प्रेरितों 6:1)। कुछ मसीही लोगों ने बे-घर बच्चों को गोद लिया हुआ है। ऐसे लोगों की आवश्यकताओं के लिए किए जाने वाले प्रबन्धों में चिल्ड्रन होम या अनाथालय और नर्सिंग होम शामिल हैं। हम विधवाओं तथा अनाथों की देखभाल के लिए हमेशा हर बात पर एकमत नहीं होते, परन्तु इस बात को मानते हैं कि हमें उनकी इस आवश्यकता का ध्यान रखना आवश्यक है।

एक और आवश्यकता का उल्लेख किया जा सकता है, जैसे कि बीमारों की देखभाल की आवश्यकता। यीशु बीमारों का ध्यान रखता था। उसने परोपकारी अनुयायियों की इन शज़्दों में सराहना की: ''मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली'' (मज़ी 25:36क)। कई मण्डलियां बीमारों की सहायता करने की कोशिश करती हैं, जिसमें उनकी आवश्यकता के अनुसार दिया जाने वाला भोजन भी होता है। कुछ देशों में, मसीही लोगों ने दुख को कम करने में सहायता के लिए अस्पताल तक बनाए हैं।

दूसरों की सेवा करना, जैसा कि अभी हम कर रहे हैं अच्छा है, परन्तु हमें इस तथ्य के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है कि मांगें हमेशा बढ़ती ही रहती हैं। या कम से कम पुरानी मांगों में नई बातें जुड़ जाती हैं।[14] तलाक के कारण कई घर बर्बाद हो रहे हैं। बच्चों की अनदेखी होती है या कई जगह उन्हें फैंक दिया जाता है। शराब और नशे की आदतें बढ़

रही हैं। वासनात्मक प्रवृज़ि बेकाबू हो रही है और AIDS की महामारी कम होती दिखाई नहीं दे रही। लोग गज़्भीर भावनात्मक समस्याओं से घिरे हुए हैं। हमारे नगरों में बेघर ''आवारा'' लोगों की गिनती बढ़ रही है। समाज में ऐसी कितनी ही और बुराइयां हैं।

मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि मेरे पास इन समस्याओं के उज़र हैं। न ही मैं यह सुझाव दे रहा हूं कि मण्डलियों के रूप में हमें इन चुनौतियों की ओर ध्यान दिलाने के लिए कार्यक्रम बनाने चाहिए। मैं यह ज़ोर देने की कोशिश कर रहा हूं कि आवश्यकताएं हैं-हर प्रकार की आवश्यकताएं हैं, चाहे वे वास्तविक या वैध हों, जिन्हें पूरा करने के लिए मसीही होने के नाते सहायता करना हमारा धर्म है।

फिर, मैं कहता हूं कि हमें अपनी प्राथमिकताओं को तय कर लेना चाहिए। हमें यीशु मसीह के उद्धार के ज्ञान तक लोगों को ले जाने के लिए अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए। इसके साथ ही, अपने आस-पास के लोगों की आवश्यकताओं को नज़रअन्दाज करने का अर्थ वह बनना है, जो परमेश्वर नहीं चाहता कि हम बनें। पहली आज्ञा तो यही है कि ''परमेश्वर अपने प्रभु को अपने सारे मन से प्रेम कर'' और दूसरी ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख'' (मज़ी 22:37, 39)। यूहन्ना ने लिखा है:

> पर जिस किसी के पास संसार की संपज़ि हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम ज़्योंकर बना रह सकता है? (1 यूहन्ना 3:17)।
>
> ... जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता। और उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे (1 यूहन्ना 4:20, 21)।

कुछ लोग सहायता करने से कैसे बचते हैं

आइए कहानी में वापस आते हैं। जैसा कि पहले ध्यान दिया गया है कि यीशु भीड़ की आवश्यकताओं से अवगत था, और उसने अपने प्रेरितों को उनकी सहायता करने के लिए कहा। चेलों के उज़र वैसे ही हैं जैसे कई बार सहायता के लिए पूछे जाने पर हम देते हैं।

''हमारे पास संसाधन नहीं हैं''

स्पष्टतया मसीह ने पहले फिलिप्पुस को चुनौती दी:

> तब यीशु ने अपनी आंखें उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलिप्पुस से कहा, हम इन के भोजन के लिए कहां से रोटी मोल लाएं? परन्तु उस ने यह बात उसे परखने के लिए कही; ज़्योंकि वह आप जानता था कि मैं ज़्या करूंगा[15] (यूहन्ना 6:5, 6)।

हमें नहीं पता प्रभु ने केवल फिलिप्पुस से ही ज़्यों पूछा।[16] सुझाव दिया गया है कि फिलिप्पुस उसी क्षेत्र से था और[17] उसे पता होगा कि कहां से सामान मिल सकता है। इसका जो भी कारण रहा हो, फिलिप्पुस से पूछा गया; और इस प्रेरित का उज़र वैसा ही था जैसा हम अज़्सर चुनौती मिलने पर देते हैं। वास्तव में, उसने कहा, ''देखते हैं *हमारे* पास सामान है या नहीं।'' एकदम से उसने वहां उपस्थित लोगों की गिनती कर ली।[18] उसने एक व्यज़्ति की आवश्यकता के हिसाब से वहां उपस्थित लोगों की गिनती को गुणा कर लिया। फिर उसने रोटी के खर्च का हिसाब लगाया और जितनी रोटियां चाहिए थीं, उससे उसको गुणा कर दिया। फिर उसने यीशु को ''कुल जोड़'' बता दिया:[19] ''दो सौ दीनार की रोटी उनके लिए पूरी भी न होंगी कि उन में से हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल जाए'' (यूहन्ना 6:7; देखें मरकुस 6:37)। एक दीनार एक साधारण मजदूर की एक दिन की मजदूरी थी (मज़ी 20:2)। जिसका अर्थ यह हुआ है कि एक श्रमिक को दो सौ दीनार कमाने के लिए आधे से अधिक वर्ष काम करना पड़ता था! चेलों की पैसों की थैली[20] में निश्चय ही इतने पैसे नहीं होंगे।

यह सच नहीं है कि हमें कभी-कभी लगता है कि हर समस्या का समाधान पैसा ही है, और किसी आवश्यकता के लिए हमारा पहला उज़र आम तौर पर यही होता है कि पहले देख लें कि मेरे पास इतने पैसे हैं भी या नहीं? कोई व्यज़्तिगत चुनौती हो, तो शायद हम उज़र दें, ''हमारे पास पैसे नहीं हैं।'' मण्डली के लिए चुनौती होने पर शायद हम कहें, ''हमारे पास इतना बजट नहीं है।'' मना किए गए काम को करना पड़े तो आम तौर पर हम परमेश्वर पर जिसके पास असीमित संसाधन हैं, निर्भर रहने के बजाय अपने ही संसाधनों को देखते हैं।

कहा गया है कि, प्रभु के काम के सज़्बन्ध में, कई बार मसीही लोग ''विश्लेषण के लकवे'' से पीड़ित होते हैं। लोगों को लगता है कि उनकी सेवकाई स्पष्टतया यही ध्यान दिलाना है कि इस योजना को ज़्यों किया जाए या यह योजना सिरे *नहीं* चढ़ेगी। मैं अपनी गलती मानता हूं कि कई बार मैं भी ऐसा ही करता हूं।

''यह हमारी समस्या नहीं है''

बाद में, सभी प्रेरितों का सामना भीड़ की आवश्यकताओं से हुआ और फिर हम उनके उज़र में अपने आप को देख सकते हैं: ''जब दिन ढलने लगा, तो बारहों ने आकर उस से कहा, भीड़ को विदा कर, कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाकर टिकें,[21] और भोजन का उपाय करें, ज़्योंकि हम यहां सुनसान जगह में हैं'' (लूका 9:12)।

उनका ''समाधान'' व्यावहारिक से कुछ कम था। उस क्षेत्र के छोटे-छोटे नगरों और गांवों में फैले दस से पन्द्रह हज़ार लोगों से पैदा उलझन की कल्पना करें। मेरे छोटे से नगर जुड्सोनिया में भोजन की तलाश में यदि कुछ हज़ार भूखे लोग अचानक आ जाएं तो हलचल मच जाएगी! चेलों ने यह सुझाव ज़्यों दिया? शायद स्वयं थके और भूखे होने के कारण, वे इस समस्या का सामना नहीं करना चाहते थे।

अफ़सोस की बात है कि लोगों की आवश्यकताओं का सामना करने पर कई बार हमारा ''समाधान'' भी यही होता है: ''चले जाओ। अपना रास्ता नापो। यह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है। मुझे परेशान न करो।'' हम परेशान नहीं होना चाहते। हम दूसरों की समस्याएं अपने सिर नहीं लेना चाहते। एक बार फिर, लगता है कि मैं भी ''दोषी'' हूं।

''वे इसके योग्य नहीं हैं''

भीड़ की सहायता न करने के लिए प्रेरित कई और कारण दे सकते थे। उदाहरण के लिए, वे कह सकते थे, ''वे हमारी सहायता के योग्य नहीं हैं। उनकी दिलचस्पी आत्मिक बातों में नहीं है। वे तो केवल मुफ़्त की दवाइयां और मुफ़्त का खाना खाने के लिए आए हैं।''[22] इसके बाद की घटनाओं से यह विश्लेषण सही सिद्ध हो गया होगा; यीशु ने बाद में संकेत दिया कि वह भीड़ अन्धविश्वासी थी और उसकी प्राथमिकताएं गलत थीं।[23]

मसीह लोगों के विचारों और उद्देश्यों को जानता होगा (यूहन्ना 2:25), परन्तु उसने इसे उनकी सहायता न करने के बहाने के रूप में इस्तेमाल नहीं किया। हमें सुस्ती और आलस के लिए उत्साहित नहीं किया जाता (2 थिस्सलुनीकियों 3:10); परन्तु यदि किसी की सचमुच आवश्यकता है, तो हमें सहायता करने की कोशिश करनी चाहिए–सहायता लेने वाले के कारण नहीं, बल्कि इस कारण कि हम ज़्या हैं।[24]

प्रभु ने सहायता न करने के अपने चेलों के बहाने नहीं माने। इसके विपरीत, उसने कहा, ''तुम ही उन्हें खाने को दो'' (मरकुस 6:37)। ज़्या ये शब्द कहते हुए उसकी आंखें मटकीं? उसने ''सब के साथ भलाई'' करने और ''विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ'' भलाई करने में अपने अनुयायियों की असफलता के बहानों को भी नहीं माना (गलातियों 6:10)।

हम कैसे सहायता कर सकते हैं

यह तो है कहानी का नकारात्मक भाग। आइए अब कहानी के सकारात्मक भाग को देखते हैं कि सचमुच में आवश्यकता होने पर हम लोगों की सहायता करने की चुनौती का सामना कैसे *कर सकते* हैं?

यीशु जैसा मन रखें

सम्भवतया सबसे महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि हम में यीशु जैसा मन होना आवश्यक है। याद रखें कि मसीह ने भीड़ पर *तरस खाया* था और उनका *स्वागत किया* था। प्रेरितों को इसमें कुछ बुरा लगा होगा, पर मसीह को उनकी स्पष्ट आवश्यकताएं दिखाई दीं।

दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता की कमी एक बड़ी असफलता है। निश्चय ही, हम में यह कमी नहीं है। अधिक समय की बात नहीं है, किसी जनाज़े के समय, जब मेरी पत्नी जोअ एक स्त्री को गले लगा रही थी, जिसकी मां मर गई थी, तो उस स्त्री ने जोअ को बताया, ''आप बहुत अच्छी हैं।'' इस आलिंगन का एक कारण है: कि

जोअ अपने आस-पास के लोगों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील रहती है। वह उन चिन्ताओं को व्यक्त करती है, जिससे दूसरों को पता चलता है कि वह मन से बोल रही है और सहायता करने का कोई रास्ता ढूंढ़ती है। उसके पास यह बड़ा विशेष दान है।

फिर, मैं कहता हूं कि यीशु जैसा मन रखना सज़्भवतया दूसरों की सहायता करने पर दिया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण सुझाव है। यदि हम ज़रूरतमंदों के प्रति मसीह वाला व्यवहार अपनाएं, तो इससे सहायता करने में आने वाली रुकावटों को दूर किया जा सकता है और किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है। तो भी, कुछ सुझाव सहायक हो सकते हैं।

जो कुछ आपके पास है, उसका इस्तेमाल करें

फिलिप्पुस और दूसरे चेलों ने उस पर ध्यान दिया था जो उनके पास *नहीं* था, परन्तु यीशु ने उन्हें उस बारे में अवगत होने के लिए उत्साहित किया, जो उनके पास पहले से *था*। उसने कहा, ''जाकर देखो तुज़्हारे पास कितनी रोटियां हैं ?'' (मरकुस 6:38क)। चेलों का ''समाधान'' था कि ''जाकर खरीद लें'' (देखें मज़ी 14:15; मरकुस 6:37), परन्तु यीशु का समाधान था कि ''जाकर देखो कि तुज़्हारे पास ज़्या है ।''

स्पष्टतया, उन्होंने वहां उपस्थित हर किसी के पास देखा होगा। यीशु और उसके प्रेरित इतनी जल्दी में थे कि वे अपने साथ कुछ नहीं लाए थे,[25] और भीड़ में शामिल लोग भी उनकी तरह ही खाली हाथ थे। प्रेरितों ने अन्य लोगों से पूछा। (दस से पन्द्रह हज़ार लोगों से पूछने में कितना समय लगा होगा ?) तब भी, उन्हें केवल एक लड़के के पास थोड़ा सा खाना ही मिल पाया होगा। अन्द्रियास ने प्रभु को बताया, ''यहां एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और दो मछलियां हैं, परन्तु इतने लोगों के लिए वे ज़्या हैं ?'' (यूहन्ना 6:9)।

''रोटी'' पढ़कर यह न समझें कि यह बेकरी पर बनी डबल-रोटी होगी, जिसे मेज पर रखने पर पूरे परिवार का पेट भर सकता है। ये रोटियां छोटी, चौरस और बड़े बिस्कुट जितनी थीं। रोटियां जौ की थीं; जो गरीबों का खाना होता था। मछली छोटे आकार की अचार वाली मछली हो सकती है, जिसके लिए वह क्षेत्र प्रसिद्ध था; सारदीन मछलियों पर विचार करें।[26] ''जौ की पांच रोटी और दो मछलियां'': एक हज़ार लोगों में रोटी का एक छोटा टुकड़ा और 2,500 में एक मछली का टुकड़ा दिया जा सकता था! जिसे खाकर एक छोटे भूखे लड़के का भी पेट नहीं भर सकता था। अन्द्रियास के शज़्द काफ़ी अल्पवज़्तव्य हैं: ''परन्तु इतने लोगों के लिए वे ज़्या हैं ?''

उस लड़के द्वारा अपना भोजन दे देने को तैयार होने के बारे में मैं कुछ कहना चाहता हूं। यह जानते हुए कि छोटे लड़कों को खाना अच्छा लगता है, किसी ने एक बार मज़ाक में कहा था कि यह तो ''रोटियां बढ़ाने से भी बड़ा चमत्कार था!'' सचमुच, इस छोटे लड़के का योगदान यादगारी है। मैं केवल यही निष्कर्ष निकाल सकता हूं कि वह लड़का छोटा तो था, परन्तु वह प्रभु से प्रभावित हुआ और उसमें विश्वास लाया था। ज़्या यह अद्‌भुत नहीं है ?

यीशु अपने अनुयायियों को यह समझाना चाहता था कि, उनके पास बहुत कुछ नहीं था, परन्तु फिर भी कुछ न कुछ अवश्य था। हम में से कई लोग जो हमारे पास *है* और जो हम कर सकते *हैं,* के बजाय जो हमारे पास *नहीं* है और जो हम कर *नहीं* सकते, की सूची बनाने में बड़े निपुण हैं। आप हैरान हो सकते हैं कि आपकी सज़्पज़ियां और गुण कितने अपर्याप्त हैं, परन्तु फिर भी परमेश्वर के प्रति अपने आप को समर्पित कर दें। इससे होने वाले परिणामों से वह आपको चकित कर सकता है!

प्रभु के संसाधनों पर निर्भर रहें, न कि अपने

परमेश्वर की सेवा में अपने संसाधनों का इस्तेमाल करते समय, इस बात को समझ लें कि आप उसके साथ जो स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी है, सहकर्मी बन जाते हैं (उत्पज़ि 14:22)! यह भी समझ लें कि जब आप उसके काम के लिए जो कुछ थोड़ा या अधिक आपके पास है, उसे देते हैं तो वह उस थोड़े से ही अद्‌भुत काम कर सकता है। आम तौर पर कहा जाता है कि प्रभु के हाथों में थोड़ा सा भी हमेशा बहुत होता है। इस अध्ययन वाली घटना से अच्छा कोई और उदाहरण नहीं हो सकता।

आप आगे की कहानी तो जानते ही होंगे: यीशु ने अपने प्रेरितों से कहा, ''लोगों को बिठा दो'' (यूहन्ना 6:10)।[27] ''उसने उन्हें आज्ञा दी कि सबको ... पांति-पांति से बिठा दो,'' और ''वे सौ-सौ और पचास-पचास करके पांति-पांति बैठ गए'' (मरकुस 6:39, 40)। यीशु द्वारा उन्हें ऐसे बैठने के लिए कहने के कई कारण होंगे। इस प्रकार के प्रबन्ध से उन्हें खिलाने का काम आसान हो जाना था। ज़्या आप दस हज़ार भूखे लोगों, उनके फैले हाथों, यीशु के इर्द-गिर्द भी और एक-दूसरे को धज़्के मारते लोगों की कल्पना कर सकते हैं। इसके अलावा, इससे यह भी सुनिश्चित हो जाना था कि कोई रह न जाए। यह भी सज़्भव है कि इससे भीड़ की गिनती करने में आसानी हुई और आश्चर्यकर्म की प्रामाणिकता में सहायता मिली।

वही करें जो प्रभु कहता है, आपको उसकी समझ आए या नहीं

ज़्या उन बारह को भीड़ को लाइनों में बिठाते समय कुछ मूर्खता भी लगी? ज़्या खाने के लिए बैठने को कहने पर लोग हैरान हुए कि पांच रोटियां और दो मछलियां वे सब कैसे खाएंगे? उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए कि भीड़ ने वही किया, जो प्रभु ने उन्हें करने को कहा था। कहा गया है कि किसी भी काम में सफलता का पहला कदम अपने संसाधनों को मापना नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा को सुनिश्चित करना और फिर उसे करना है।

जब सब तैयार थे, तो मसीह ने ''उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया; और स्वर्ग की ओर'' देखा, जो सब आशिषों का देने वाला है (याकूब 1:17), इसके लिए धन्यवाद देते हुए (देखें यूहन्ना 6:11, 23), उस खाने पर आशीष दी (मज़ी 14:19)।[28] खाने से पहले की यहूदी प्रार्थना बड़ी आसान थी: ''हमारे परमेश्वर यहोवा, सृष्टि के राजा, तू धन्य है, जो पृथ्वी से रोटी निकालता है।''[29] यीशु ने ऐसे ही शज़्दों का इस्तेमाल किया होगा।

फिर अभिभूत करने वाला भाग आया: मसीह ''रोटियां तोड़-तोड़ कर चेलों को देता गया, कि वे लोगों को परोसें [लूका 9:16], और वे दो मछलियां भी उन सब में बांट दीं'' (मरकुस 6:41)। मैं पुकारना चाहता हूं, ''ज़रा रुको! मुझे विस्तार से समझाना कि वहां ज़्या हुआ था!'' एक बार फिर (अगर हमें आवश्यकता हो), हमारे पास प्रमाण है कि बाइबल हमारी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए नहीं लिखी गई थी।

जो कुछ वहां हुआ, उसके बारे में मैं आश्वस्त हूं कि यीशु के हाथों से विशेष तौर पर आश्चर्यकर्म हुआ। कुछ लोगों का मत है कि यीशु ने हर प्रेरित को एक टोकरी दी और जैसे-जैसे वे भोजन परोसते रहे, वैसे-वैसे भोजन उनकी टोकरियों में बढ़ता गया। परन्तु बाइबल यह ज़ोर देती है कि ''वह रोटियां तोड़-तोड़कर चेलों को देता गया कि वे लोगों को परोसें'' (मरकुस 6:41)। या यूं कहें कि चेलों को अपनी टोकरियां भरने के लिए बार-बार वापस आना पड़ता था।[30] किसी ने कहा है कि यीशु रसोइया था और चेले केवल वेटर थे।[31]

यदि मुझे अनुमान लगाना हो, तो मैं यही अनुमान लगाऊंगा कि यह आश्चर्यकर्म एलिय्याह के समय में न खाली होने वाले मैदे के घड़े और तेल की कुप्पी जैसा ही था (1 राजा 17:14-16) अर्थात यीशु बार-बार उस लड़के के थैले या टोकरी में हाथ डालता था जहां उसका खाना रखा था, और रोटियां और मछलियां निकालता जा रहा था। (वहां उपस्थित सब लोगों की आंखें खुली की खुली रहने पर मैं मसीह के चेहरे पर खिलती मुस्कान देख सकता हूं।) वहां होने वाली छोटी से छोटी बात जानना आवश्यक नहीं है। हमारे लिए इतना जानना ही काफ़ी है कि वहां एक *आश्चर्यकर्म* हुआ था, जो सचमुच में आश्चर्यकर्म था।

मत्ती, मरकुस और लूका के अनुसार लोग ''खाकर तृप्त हो गए'' (मत्ती 14:20क; मरकुस 6:42; लूका 9:17क)। यूहन्ना ने ज़ोर दिया कि उन्हें ''जितनी वे चाहते थे'' मिलीं और ''वे खाकर तृप्त हो गए'' (यूहन्ना 6:11, 12)। ज़्योंकि भीड़ अगले ही दिन ऐसी ही और घटना देखने के लिए आई (यूहन्ना 6:26, 27, 34), यीशु ने खाने की गुणवज़ा भी बढ़ा दी होगी, ताकि जौ की सूखी अकड़ी रोटी और नमकीन मछली एक शाही दावत की तरह लगे।

जब सब पेट भर खा चुके तो मसीह ने अपने चेलों से कहा, ''बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फैंका न जाए'' (यूहन्ना 6:12), ''और उन्होंने टुकड़ों से बारह टोकरियां भर कर उठाईं, और कुछ मछलियों से भी'' (मरकुस 6:43)।[32] कहानी के इस भाग का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया गया है कि प्रभु किसी चीज़ को बर्बाद करने में यकीन नहीं रखता और यही इसकी सही प्रासंगिकता है। तौ भी इस घटना को विस्तारपूर्वक बताने का मुज़्य उद्देश्य आश्चर्यकर्म की प्रकृति की अधिकता होने पर ज़ोर देना है। थोड़े से खाने को न केवल दस से पन्द्रह हज़ार लोगों को खिलाया गया, बल्कि अन्त में पहले से भी अधिक खाना बच भी गया था!

दुख की बात है कि कई ऐसे लोग हैं, जो इस बात से इनकार करते हैं कि यह वास्तव में एक चमत्कार था। कुछ लोगों ने यह विचार प्रसिद्ध कर दिया है कि वहां उपस्थित लोगों

में से कइयों के पास अपनी जेबों में रखा हुआ खाना था, जिसे उन्होंने उस छोटे लड़के द्वारा नि:स्वार्थपूर्ण ढंग से अपनी रोटियां और मछलियां देने के बाद एक-दूसरे के साथ बांट लिया था।[33] यद्यपि ज़मीनी तौर पर इस ''व्याज़्या'' में कोई दम नहीं है। यदि यीशु का काम लोगों को अपना भोजन एक-दूसरे के साथ बांटने के लिए लज्जित करने के लिए ही था, तो उनके उसे राजा बनाने की इच्छा की व्याज़्या करना असज़्भव है (यूहन्ना 6:15)। यदि उन्होंने भोजन बनते न देखा होता, तो अगले दिन और रोटी के लिए उसकी तलाश करने का कोई कारण नहीं था। और तर्कसंगत व्याज़्याएं दी गई हैं,[34] परन्तु सब व्याज़्याएं यूहन्ना की स्पष्ट शिक्षा का कि यीशु ने ''*चिह्न*''अर्थात आश्चर्यकर्म दिखाया, इनकार करती हैं (यूहन्ना 6:14)। बाइबल का विवरण स्पष्ट है: यीशु ने एक लड़के का खाना लेकर उसे हज़ारों लोगों को खिलाने के लिए बढ़ा दिया!

दूसरों की सहायता में रुकावट बनने वाले बहानों को छोड़ दें

एक बार फिर, हम ज़ोर देते हैं कि प्रभु के हाथ में थोड़ी सी चीज़ भी बहुत अधिक हो जाती है। आइए हम यह शिकायत करना बन्द कर दें कि हमारे पास ज़्या नहीं है और हम ज़्या नहीं कर सकते। इसके बजाय, आइए दूसरों की सहायता के लिए जो कुछ हमारे पास है, उसका इस्तेमाल करें और जो कुछ हम कर सकते हैं वह करें और फिर चकित होने को तैयार रहें कि कैसे वह हमारे संसाधनों और परिणामों को बढ़ा सकता है!

सारांश

यीशु इस अनुभव से अपने प्रेरितों को यह सिखाना चाहता था कि वह जीवन की *किसी* भी चुनौती का सामना करने के लिए उनकी सहायता कर सकता है (देखें मरकुस 6:52)। उनके लिए इस सच्चाई को समझना कठिन था, परन्तु मुझे आशा है कि हम इसे आसानी से समझ सकते हैं। मुझे आशा है कि हम समझ लेंगे कि जब हम बहाने बनाना बन्द करके जो कुछ कर सकते हैं, वह करने लगेंगे, तो परमेश्वर हमारे प्रयासों में आशीष देगा और दूसरों के जीवनों को भी आशीष देगा।

दूसरों की सहायता करने पर यह प्रवचन मेरी पांच रोटियां और दो मछलियां हैं। मैं इसकी सीमाओं को जानता हूं। मैं जानता हूं कि अपने आप में यह उन हज़ारों मनों का पेट नहीं भर सकता, जिनके पास यह जाएगा। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर इसे आशीषित करे और इसकी उपयोगिता बढ़ाए। सबसे बढ़कर मेरी प्रार्थना है कि इससे मसीही लोगों को यह समझने में सहायता मिले कि लोगों की आवश्यकताएं हैं, हमें उन आवश्यकताओं को पूरा करना है और यह कि प्रभु की सहायता से हम उनकी आवश्यकताओं को पूरा *कर सकते* हैं!

नोट्स

इस प्रस्तुति में, मैंने सामान्य अर्थ में दूसरों की सहायता करने पर ज़ोर दिया है। आप

दूसरों की सहायता के एक पहलू ''जब लोग सहायता के योग्य न हों'' पर ज़ोर देना चाहें तो दे सकते हैं।

यदि आपको व्याज़्यात्मक प्रचार अच्छा लगता है, तो उस लड़के के दृष्टिकोण से जिसका खाना यीशु ने बढ़ाया था, इस कहानी को बढ़ाने की कोशिश करें।

थोड़े से बदलाव के लिए, आप इस प्रवचन का शीर्षक ''दस हज़ार को खिलाना'' रख सकते हैं।[35]

टिप्पणियां

[1]यह विचार करने पर कि यीशु द्वारा किए गए हज़ारों आश्चर्यकर्मों में से यूहन्ना द्वारा केवल सात का चयन किया गया और यह कि यूहन्ना ने सुसमाचार के सहदर्शी वृज़ांतों की बातों को जानबूझकर छोड़ा, दोहराव का महत्व बढ़ जाता है। (''मसीह का जीवन, भाग 1'' में ''यूहन्ना की पुस्तक'' पाठ का अध्ययन करें।) [2]''सृजनात्मक'' आश्चर्यकर्म वह है, जिसमें मसीह ने कुछ ''रचना की।'' एक और उदाहरण उसका पानी का मय बनाना है। [3]पिछले पाठ में, हमने इस घटना को विश्वास की परीक्षा के दृष्टिकोण से देखा था। [4]2 थिस्सलुनीकियों 3 अध्याय में पौलुस की शिक्षा के अनुसार, कुछ लोग हैं, जिनकी हमें सहायता *नहीं* करनी चाहिए, ज़्योंकि ऐसा करना उनके आलस्य को प्रोत्साहन देना है। मैं इस पर संक्षेप में बात करूंगा (और आप इस विचार को विस्तार दे सकते हैं), परन्तु इस प्रवचन में मेरा उद्देश्य सहायता करने के नकारात्मक पहलू के बजाय सकारात्मक पर ज़ोर देना है। जब मैं वास्तविक/सही/सचमुच की आवश्यकताओं की बात करता हूं, तो मेरे कहने का अर्थ वे आवश्यकताएं होती हैं, जिन्हें हम पवित्र शास्त्र के द्वारा पूरा कर सकते हैं। [5]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''सफलता का खतरा'' में हेरोदेस पर टिप्पणियों की समीक्षा करें। [6]ये वाज़्य इस मान्यता पर आधारित हैं कि उनकी यात्रा कफ़रनहूम या इसके निकट से आरज़्भ हुई। इस पुस्तक में ''यीशु की सेवकाई के दौरान पलिश्तीन'' का मानचित्र देखें। आप झील के पूर्वी ओर जाने के यीशु के उद्देश्यों की समीक्षा करना चाहें तो कर सकते हैं। (इस पुस्तक में पहले आए ''सफलता से खतरा'' पाठ का अध्ययन करें।) [7]उस क्षेत्र से परिचित लोग हमें आश्वस्त करते हैं कि इससे कोई विशेष समस्या नहीं आई होगी। पैदल चलने वालों को यरदन नदी पार करनी पड़ी थी, परन्तु कुछ ही दूरी पर एक कम पानी वाली जगह थी, जहां नदी गलील के समुद्र में गिरती थी। [8]मुझे नहीं लगता कि मैं यहां पर उन पर दोष लगा रहा हूं। जब यीशु ने भीड़ को खिलाने का सुझाव दिया, तो चेलों का उज़र था कि उन्हें भेज दिया जाए (मरकुस 6:36)। [9]इस प्रवचन पर काम करते समय, एक स्त्री का मुझे फोन आया, वास्तव में, वह मुझसे कहने लगी कि मैं जो कुछ कर रहा हूं, उसे छोड़कर उसकी सहायता के लिए एक या इससे अधिक घंटे का समय निकालूं। यीशु का उदाहरण मन में ताज़ा होने के कारण, मेरे पास कोई उपाय नहीं था। मैंने उसकी सहायता की। [10]''भेड़ें, जिनका कोई रखवाला न हो'' वाज़्यांश पर टिप्पणियों के लिए, इस पुस्तक में पहले आए, ''सफलता से खतरा'' पाठ देखें।

[11]यूहन्ना ने व्याज़्या की है कि ''यहूदियों के फसह का पर्व निकट था'' (यूहन्ना 6:4) सुझाव दिया गया है कि यह, यह समझाने के लिए लिखा गया था कि भीड़ कैसे बढ़ी, जैसे यह देखने के लिए कि वहां ज़्या उज़ेजना है, यात्री यरूशलेम को जाते हुए रुक गए। इसमें समस्या यह है कि वे अपने साथ पर्याप्त सामान लाए होंगे, परन्तु जब दिन के अन्त में भीड़ का सर्वेक्षण किया गया, तो कोई सामान नहीं मिला। शायद यह विवरण केवल वर्ष के समय पर ज़ोर देने के लिए, यह समझाने के लिए कि उस क्षेत्र में ''बहुत घास'' ज़्यों हो रही थी, दिया गया (यूहन्ना 6:10)। [12]कुछ लोगों का मानना है कि कुछ स्त्रियां और बच्चे इतनी देर तक

रह गए होंगे, जबकि दूसरों का कहना है कि यह ''मूर्खता है!'' [13]उदारवादी टीकाकार जो यह नहीं मानते कि यीशु ने वास्तव में आश्चर्यकर्म किए थे-यह कहना पसन्द करते हैं कि ''इतनी लम्बी यात्रा के लिए लोग भोजन साथ लिए बिना नहीं आए होंगे।'' परन्तु, सुसमाचार के वृत्तांतों के लेखकों के द्वारा बनाई गई तस्वीर यह है कि यीशु और भीड़ दोनों ही *जल्दी* में वहां आए थे। [14]गलातियों 6:10 सामान्य ढंग से ''भलाई'' करने की बात करता है; 1 थिस्सलुनीकियों 5:14 भी संकेत देता है कि हमें जैसे भी हो दूसरों की आवश्यकता में उनकी सहायता करनी चाहिए। जिन आवश्यकताओं का मैंने इस पद में उल्लेख किया है, वे वहां पर आम होती हैं, जहां मैं रहता हूं। इसे अपने क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार बदल लें। हो सकता है कि आप वहां रहते हों, जहां मूल आवश्यकताएं जिनका मैंने पहले उल्लेख किया है जैसे भोजन, वस्त्र और ऐसी चीज़ें अभी भी मुश्किल से मिलती हों। [15]प्रभु हमारे सामने जो भी चुनौती रखता है, उसका समाधान उसके पास पहले से होता है। हमें केवल इसे समझना होता है कि यह ज़्या है! [16]फिलिप्पुस यीशु के आरज़्भिक चेलों में से एक था। (''मसीह का जीवन, भाग 1'' में ''सब बातों का पहली बार'' पाठ पर विचार करें।) [17]फिलिप्पुस बैतसैदा का रहने वाला था (यूहन्ना 1:44; 12:21), जो सज़्भवतया वह बैतसैदा था जो कफ़रनहूम का उपनगर था, परन्तु यह सज़्भव है कि यह समुद्र के पूर्वी किनारे वाला बैतसैदा था (जहां पांच हज़ार को खिलाने की घटना घटी; लूका 9:10)। [18]हम नहीं जानते कि वास्तव में फिलिप्पुस के मन में ज़्या था; परन्तु उस बात पर आने के लिए जिसका उल्लेख यहां हुआ है, उसे ऐसी ही प्रक्रिया में से गुज़रना था। जहां मैं रहता हूं वहां उसके काम का वर्णन करने के लिए कई अलंकार हैं, जैसे ''उसने पैंसिल को मुश्किल में डाल दिया।'' इस अवसर के लिए उपयुज़्त मिलती-जुलती एक और अभिव्यज़्ति है: ''बिन काउंटर्स''-जिनकी चिन्ता लोगों के बजाय धन (अर्थात ''बिन'') पर अधिक पर होती है। [19]''कुल जोड़'' गणित की सरल समस्या के नीचे कुल जोड़ या अन्तिम परिणाम को कहते हैं। [20]यह थैला या सन्दूक था, जिसमें यीशु और उसके चेले सफ़र के दौरान इस्तेमाल के लिए धन रखते थे। यहूदा इस थैले/सन्दूक का इंचार्ज था (यूहन्ना 12:6; 13:29)।

[21]यह तथ्य कि प्रेरितों ने ''टिकें'' का उल्लेख किया, प्रमाण है कि मैदान में उपस्थित हज़ारों लोगों में से अधिकतर स्थानीय नहीं थे। [22]जहां मैं रहता हूं वहां हम कहेंगे, ''वे यहां केवल रोटी के लिए आए हैं।'' [23]इस पुस्तक में पहले आए ''परीक्षा का समय'' पाठ में चर्चा देखें। [24]इसे ''हम *किसके* हैं'' भी कहा जा सकता है। [25]इस पुस्तक में पहले आए ''परीक्षा का समय'' पाठ में टिप्पणी 6 देखें। [26]जहां मैं रहता हूं, वहां सारदीन मछलियां कैन में बिकती हैं। एक छोटे कैन में कई दर्जन सारदीन आ जाती हैं। [27]यूहन्ना ने जोड़ा है, ''उस जगह बहुत घास थी,'' जो यह समझाने के लिए कि लोग मैदान में बैठने को ज़्यों तैयार होंगे एक प्रत्यक्षदर्शी का विवरण था (मज़ी 14:19; मरकुस 6:39 भी देखें)। [28]इस अवसर पर यीशु का उदाहरण हमें सिखाता है कि हमें अपने भोजन के लिए धन्यवाद देना चाहिए, तब भी जब यह बहुत ही अपर्याप्त हो। यहूदियों में कहावत थी: ''बिना धन्यवाद किए आनन्द लेने वाला ऐसा है, जिसने परमेश्वर को लूट लिया हो'' (विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ ल्यूक,* संशो. संस्क. द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ [फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1975], 118)। [29]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* संशो. संस्क., अंक 2, द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ [फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1975], 100. [30]आप हैरान होंगे कि प्रेरितों द्वारा प्रयुज़्त टोकरियां कहां से आईं। हम सांसारिक इतिहास से जानते हैं कि यहूदी लोग उस समय छोटी टोकरियां वैसे ही रखते थे जैसे हमारे लोग आज पर्स आदि रखते हैं। संसार के कई देशों में कोई चीज़ साथ ले जाना एक प्रथा है, जिसे वे दिन के समय इस्तेमाल कर सकें। या तो टोकरियां चेलों की अपनी थीं, या वे भीड़ में से लोगों से ली गई होंगी।

[31]किसी ने मसीह को निर्माण करने वाला और प्रेरितों को वितरण करने वाले के रूप में दिखाया है। [32]बचे हुए भोजन का ज़्या किया? यह अनावश्यक विवरण है, इसलिए, सुसमाचार के वृत्तांतों में कुछ नहीं बताया गया। यदि बारह टोकरियां प्रेरितों की थीं, तो हो सकता है यह उनका अगले सप्ताह का भोजन रहा हो। यदि उन्होंने टोकरियां लोगों से ली थीं, तो हो सकता है कि जिनकी टोकरियां थीं, उन्हें ही यह भोजन दे दिया गया हो। निश्चय ही बचे हुए भाग में से उस छोटे लड़के को काफ़ी मिला होगा। वारेन वियर्सबे ने लिखा है,

''मैं हैरान हूं कि वह लड़का अपने घर कितने टुकड़े ले गया होगा? उसकी मां की हैरानगी की कल्पना करें, जब उसके लड़के ने उसे वह कहानी बताई होगी!'' (वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री,* अंक 1 [व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989], 51)।[33]ये संदेहवादी इस विचार का कि यीशु ने इस दौरे में कोई सामान साथ नहीं रखा होगा, मज़ाक उड़ाते हैं, परन्तु बाइबल के वृत्तांत के अनुसार, यह संक्षिप्त दौरा था।[34]एक और ''व्याख्या'' को ''सैक्रामैन्टल एक्सप्लेनेशन'' कहा जाता है: कि सब को रोटी और मछली के एक या दो टुकड़े मिले, परन्तु यह कि इससे वे किसी प्रकार संतुष्ट हो गए, अवधारणा यूहन्ना की बात के कि वे ''तृप्त हो गए'' (यूहन्ना 6:11, 12) विपरीत है और यह समझाने में असफल रहती है कि बाद में टुकड़ों की बारह टोकरियां कैसे बच गई थीं![35]परन्तु आप इस प्रवचन को विस्तार देकर लोगों को प्रभु के पास आने के लिए प्रोत्साहित करके साथ समाप्त कर सकते हैं। आखिर जब तक वे अपने सम्बन्ध को परमेश्वर के साथ नहीं बनाते तब तक वही करने के लिए सीमित होंगे, जो वे कर सकते हैं। आप मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; और गलातियों 3:26, 27 जैसे पदों का इस्तेमाल कर सकते हैं।